कथनी और करनी में समानता रखें शिक्षकः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, कोलकाता चातुर्मास के बाद पश्चिमी इलाकों में स्पर्श का भाव प्रकट, जयकारों से गूंजा पांडाल, केलवा में एक नवम्बर को होगी समक्य दीक्षा

केलवाः 15 सितम्बर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11 वें अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण ने शिक्षकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे अपनी कथनी और करनी में समानता रखने का प्रयास करें। इससे विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलेगी और वे सही लक्ष्य की ओर अपने कदम बढा सकेंगे। शिक्षकों के पास बच्चों को सही मार्ग दिखाने की शक्ति है। इसका उचित प्रयोग करने की आवश्यकता है।

आचार्यश्री ने यह उद्गार यहां तेरापंथ समवसरण में चातुर्मास के दौरान जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर के तीसरे दिन शुक्रवार को व्यक्त किए। आचार्यश्री ने शिक्षकों से कहा कि वे भविष्य निर्माण की आधार धुरी है। विद्यार्थियों को वे जिस तरह ज्ञान देंगे उसी के अनुरूप वह ग्रहण करेगा। उन्हें किताबी ज्ञान के साथ संस्कारों से अवगत कराना भी आवश्यक है। स्वयं संस्कारवान होंगे तो विद्यार्थी को भी अच्छे संस्कार, आदत और वाणी पर नियंत्रण की शिक्षा दे पाएंगे।

उन्होंने कहा कि आज कई शिक्षक अपने विद्यार्थियों से तम्बाकू इत्यादि बनवाकर उसका सेवन करते देखे जाते है। यह सर्वथा गलत है। हम विद्यार्थी का भविष्य संवारने वाले है न की बिगाडने वाले। हम उसके सामने और साथ ही इस तरह की वस्तुओं का सेवन करेंगे तो उसमें में इस तरह की आदत बनेगी, फिर शिक्षक और विद्यार्थी में अंतर कहां रहा। इसलिए स्वयं नशामुक्त होने का संकल्प लें और इसकी प्रेरणा विद्यार्थियों को देने का प्रयास करें। शिक्षक आत्मा को देखने की बात से पहले अपने मन पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें। गुस्से और अहंकार पर काबू रखने की आवश्यकता है। अहंकार व्यक्ति की आत्मा की दुश्मन है। इससे बचने का प्रयास आज नितांत आवश्यक हो गया है।

आचार्यश्री ने कहा कि आत्मा को जानना और उसे देखना कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है। भगवान महावीर स्वामी उन विरलों में से एक थे, जिन्होंने आत्मा का साक्षात किया। श्रावक समाज का भी यह लक्ष्य होना चाहिए कि वह साधना और संयम की दिशा में बढता जाए। साधना के क्षेत्र में केवल मांगना ही नहीं जानना भी आवश्यक है।

जानने के बाद सम्यक मार्ग की पहल करनी चाहिए। जंगल तक जाना सम्यक हो सकता है, लेकिन मूल आवश्यकता इस बात की है कि हम राग–द्वेष से बचने की साधना करे। आत्मा कल्पना की बात नहीं है। इसकी अनुभूति होनी चाहिए। साधना के माध्यम से हम आत्मा के दर्शन कर सकते है।

अच्छा वातावरण बनाएं

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि साधना में वातावरण का बडा महत्व है। सतयुग में हमेशा अच्छा वातावरण रहता था और व्यक्ति साधना कर लेता था। आज के परिवेश में ऐसा संभव नहीं है। वातावरण का अच्छा बनाने के प्रयास की जरूरत है। वातावरण अच्छा रहेगा तो धर्म की सम्यक आराधना हो सकेगी। श्रावक अपने जीवन में ज्ञावकत्व की साधना करता है और व्रतों की पालना करता है तो पांचवें भाव की ओर अग्रसर हो सकता हैं। साथ ही देवलोक के एक के साथ एक मोक्ष प्राप्त कर मोक्षपथ गामी बन सकता है। परमानंद को प्राप्त कर सकता है। आवश्यकता है कि साधनापूर्ण जीवन व्यतीत किया जाए। हमेशा मैं श्रावक हूं की ध्वनि मस्तिष्क में गूंजती रहे। जब इस तरह की साधना रहती है तो कलियुग स्वर्णिम युग बन सकता है। इस अवसर पर पश्चिमी क्षेत्रों से आचार्यश्री के दर्शनों के लिए आए श्रावक समाज ने आचार्यश्री से कुछ समय उनके शहरों में करने की अर्ज प्रस्तुत की। इस आचार्यश्री ने कहा कि वर्ष 2017 के कोलकाता चातुर्मास के बाद वे सिलीगुडी, कटक और पश्चिमी उडीसा में स्पर्श करेंगे। ऐसा स्वयं का भाव है। आचार्यश्री की इस भावना के साथ ही पूरा पांडाल जयकारों से गूंज उठा और खुशी की लहर छा गई। इस दौरान बताया गया कि आगामी एक नवम्बर को केलवा में सम्यक दीक्षा समारोह आयोजित किया जाएगा। इसे लेकर व्यवस्था समिति की ओर से तैयारियां शुरू हो गई है। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।